GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 2
March - April: 2026

डॉ. रमेश उपाध्याय की कहानियों में स्त्री पुरुष संबंध की संवेदना

भावना आर. सोलंकी
स्नातकोत्तर हिंदी विभाग
सरदार पटेल विश्वविद्यालय
वल्लभ विद्यानगर

स्त्री और पुरुष दोनों समाज की नींव हैं । उनके मध्य उचित सामंजस्य अनिवार्य है जिससे दोनों में आपसी प्रेम व सौहार्द बराबर बना रहे । उनका समाज के निर्माण में महत्वपूर्ण व समान योगदान है । एक के बिना दूसरा अधूरा है । वे दोनों मिलकर समाज को चलाते हैं । गति प्रदान करते हैं और उसका आधार बनते हैं । इसलिए उनकी समझ तथा सूझ-बूझ से एक साथ चलना आवश्यक है ।

रमेश उपाध्याय की कहानियों में स्त्री-पुरुष संबंधों के मध्य कई तरह की परिस्थितियाँ स्पष्ट नजर आती हैं । पति-पत्नी के मध्य वैवाहिक जीवन में तनाव-अलगाव की स्थिति, बेरोजगार पति तथा नौकरी पेशा, पत्नी के मध्य मनमुटाव व टकराहट, घरेलू हिंसा, विवाहेत्तर प्रेम संबंध जैसी कई संवेदनाएँ चित्रित होती हैं । रमेश उपाध्याय स्त्री-पुरुष समानता के पक्षधर हैं । पति-पत्नी को वैवाहिक जीवन में किस तरह सूझ-बूझ से चलना है, आगे बढ़ना है इसका स्पष्टीकरण लेखक ने अपनी कहानियों में किया है । पति-पत्नी के वैवाहिक जीवन में मनमुटाव या सोच में भिन्नता आने के उपरांत किस प्रकार संबंध बिखर जाते हैं इसका यथार्थ चित्रण 'घुमाव', 'दूसरी पत्नी', 'साफइयाँ', 'व्यवस्था' 'अपने ही शहर में', 'षड्यंत्र' कहानियों में हुआ है ।

'घुमाव' कहानी में शर्मा साहब नामक पात्र तथा उनकी पत्नी निर्मल दोनों के मध्य सोच का अंतर आ जाता है । दांपत्य जीवन में टूटन, बिखराव का कारण है— सोच में अंतर या भिन्नता । जहाँ एक तरफ शर्मा साहब विश्वविद्यालय में लेक्चरर के पद पर कार्यरत हैं और एक आधुनिक व नए ढंग का मिजाज रखते हैं, वहीं दूसरी ओर उनकी पत्नी एक साधारण कम पढ़ी-लिखी, कस्बाई

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 2
March - April: 2026

स्त्री है जो सादगी पसंद करती है । पति अपनी पत्नी को बदलना चाहता है, शहरी रंग-रूप में ढालना चाहता है, समाज तथा लोगों के बीच अपनी प्रतिष्ठा बनाने हेतु उसे अंग्रेजी सिखाने तथा सभ्य बनाने पर तुला रहता है जो उसकी दृष्टि में आधुनिकता का एक रूप है । वह स्वयं आधुनिक जीवन जीने का आदी है इसलिए पत्नी से भी अपेक्षा करता है कि वह भी आधुनिक तौर-तरीकों में रहे किन्तु पत्नी स्पष्ट इनकार करती है क्योंकि वह पति के लिए तो ये सब कर सकती है लेकिन लोगों को दिखाने तथा प्रसन्न करने के लिए वह ऐसा कुछ नहीं कर सकती । "फिर उसने रोते हुए ही, लेकिन बड़े गुस्से में कहा कि वह शर्मा साहब के लिए सब कुछ कर सकती है, लेकिन दूसरों को खुश करने के लिए कुछ नहीं करेगी। उसने यह भी कहा कि शर्मा साहब अपनी ज़िंदगी अपने लिए नहीं, दूसरों के लिए जी रहे हैं ।"[1]

'दूसरी पत्नी' कहानी में पति की सोच प्रगतिशील है । वह अपनी अनपढ़ पत्नी को पढ़ा-लिखाकर अपने समकक्ष बनाना चाहता है और आगे बढ़ता हुआ देखना चाहता है लेकिन पत्नी अपने संस्कारों को भूल कुछ अधिक ही आधुनिक हो जाती है । पति को भी यह सब चीजें सामान्य प्रतीत होती हैं । अतः प्रगतिशीलता व्यक्ति की सोच या मानसिकता में होती है । बाहरी आकर्षण या पहनावे में नहीं । आधुनिकता परंपरा को पोषीत करती हुई व्यक्ति को आगे बढ़ाती है और नकारात्मकता या रूढ़िवादिता को दूर करती है ।

अतः दांपत्य जीवन में प्रेम तथा आपसी सौहार्द तभी रहता है जब दोनों पति-पत्नी एक-दूसरे को ठीक उसी रूप में स्वीकार करें जैसा वह वास्तविक रूप में है । एक का दूसरे को बदलना, संबंधों में ऊब उत्पन्न करता है । यही स्थिति शर्मा साहब तथा निर्मल के रिश्ते में होती है और अंततः पति विवाहेत्तर संबंध स्थापित करता है और किसी अन्य स्त्री से प्रेम करने लगता है । स्वयं को आधुनिक व प्रगतिशील समझने वाले शर्मा साहब अपनी पत्नी को आधुनिक व पढ़ी-लिखी बनाने की कोशिश में अपना भरा परिवार तोड़ देते हैं । वह उसे तलाक देकर मंजुश्री से दूसरा विवाह कर लेते हैं किन्तु

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 2
March - April: 2026

उसके साथ भी वह सुखी नहीं रह पाते और उनका दांपत्य जीवन तनावग्रस्त रहता है । तनाव, ऊब, चिड़चिड़ापन, अक्सर उनके रिश्तों में बनी रहती है ।

पति-पत्नी के संबंधों में तनाव अलगाव की स्थिति 'सफाइयाँ' कहानी के माध्यम से स्पष्ट होती है । सुरिंदर एक प्रॉपर्टी डीलर है जो उम्मी के साथ प्रेम-विवाह करता है । उम्मी एक अमीर संपन्न परिवार की लड़की है और विवाह से पूर्व प्रेम व आदर्शवादी रूप अपनाती हुई वह कहती है, "मेरे को किसी ऐसे आदमी के साथ शादी नहीं करनी जो पैसे के पीछे पागल रहे । मैं चाहती हूँ, बंदा गरीब ही क्यों न हो, मेरे को प्यार करे, मेरे पास बैठे, मेरा सुख-दुःख शेयर करे । मैं ऐसे आदमी के साथ सूखी रोटी खाके भी गुज़ारा कर लूँगी, कोई शिकायत नहीं करूँगी ।"[2]

किन्तु विवाह के उपरांत उम्मी का व्यवहार तथा आदर्शवादी विचार बदल जाते हैं और वह सुरिंदर से यह अपेक्षा करती है कि वह उसके साथ-साथ उसकी माँ तथा भाई-बहन पर भी खर्च करे और उनका भी पूरा ख्याल रखे । उम्मी अपने भाई-बहन पर पानी की तरह पैसे बहाने वाली लगती है । इस बात को लेकर सुरिंदर उसे समझाने का प्रयास करता है तो वह क्रोधित स्वर में कहती है, "रक्खों अपना पैसा और संभालो अपना घर । मैंने नहीं रहना अब तुम्हारे जैसे कमीने के साथ । मेरे को पता होता कि कल तुम ऐसे निकलोगे, तो मैं तभी किसी पैसे वाले से शादी कर लेती ।"[3] अंततः सुरिंदर पत्नी की बहन सुम्मी से विवाहेत्तर प्रेम संबंध स्थापित करता है और उनके प्रेम संबंध का आभास होने पर उम्मी आत्महत्या कर लेती है । इसके पश्चात सुरिंदर तथा सुम्मी दोनों विवाह कर लेते हैं किन्तु सुरिंदर के बच्चे सुम्मी को माँ के रूप में स्वीकार नहीं करते और पिता को अपनी माँ का कातिल समझते हैं ।

इस तरह 'व्यवस्था', 'अपने ही शहर में', 'षड्यंत्र', 'तिलताड़मल' कहानियों में भी पति-पत्नी के संबंधों में तनावपूर्ण स्थिति का चित्रण मिलता है । 'व्यवस्था' कहानी के अविनाश तथा अमृता, 'षड्यंत्र' कहानी के केशोदास तथा ईसुरी, 'तिलताड़मल' कहानी के डॉ. तिलताड़मल तथा मीरा, 'अपने ही शहर में' कहानी की स्त्री पात्र नीना, 'स्पंदन' कहानी के चंद्रकांत तथा मंजुला, 'अग्निसंभवा' कहानी

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 2
March - April: 2026

में उद्योग पति तथा उसकी पत्नी इन सभी के दांपत्य जीवन में आपसी समझ व सौहार्द का अभाव है जिसके कारण इनके संबंधों में अशांति, अलगाव तथा लड़ाई-झगड़े होते हैं और घर-परिवार में कलह निरंतर रहता है । घरेलू हिंसा, विवाहेत्तर प्रेम संबंध, पति का पत्नी से पैसो लिए विवाह करना अर्थात् लालची तथा स्वार्थी सोच इनके दांपत्य जीवन में टूटन तथा बिखराव का कारण बनती है । पति द्वारा पत्नी पर अत्याचार, मार-पीट तथा लड़ाई-झगड़ा करना तथा विवाहेत्तर संबंध स्थापित करना और वहीं पत्नी द्वारा पति को नीचा दिखाना और उसे अपने अनुकूल ढालने का प्रयत्न करना पति-पत्नी के रिश्ते को असंतुलित तथा कमजोर बनाता है ।

एक बेरोजगार पति की पीड़ा, दर्द मनोस्थिति को लेखक ने अभिव्यक्ति प्रदान की है । नौकरी पेशा या कामकाजी पत्नी द्वारा बेरोजगार पति को दबाया या नीचा दिखाया जाता है तथा उसका अनादर किया जाता है । 'रोज की तरह', 'बदलाव से पहले', 'नाटकीय', 'अलग और विपरीत', 'दौड़' आदि कहानियों में बेरोजगार पति के मन की व्यथा व्यक्त हुई है कि किस तरह वह पत्नी द्वारा अपमानित होता हुआ अपने स्वाभिमान हेतु स्वयं काम की तलाश में बाहर निकलता है ।

'अलग और विपरीत' कहानी में बेरोजगार पति घर-जमाई के रूप में रहता है । वह पत्नी द्वारा निरंतर अपमानित होता है । दोनों की सोच भी अलग है किन्तु धीरे-धीरे पति को इस तरह पत्नी के साथ ससुराल में रहना अपमान जनक प्रतीत होता है और अपने स्वाभिमान की रक्षा हेतु अंततः वह सास-ससुर से अलग पत्नी तथा बेटी के साथ अपने अलग घर में रहने का निर्णय लेता है । अतः बेरोजगार पति की स्वाभिमानी प्रवृति यहाँ झलकती दिखाई देती है ।

'बदलाव से पहले' कहानी में स्वदेश और प्रभा दोनों दम्पति हैं । प्रभा एक कामकाजी स्त्री है और इसका पति भी उसी के बराबर पढ़ा है किन्तु बेरोजगार है । पत्नी कमाकर लाती है और पति घर बैठकर खाता है । पति-पत्नी के वैवाहिक जीवन में तनाव, मनमुटाव की स्थिति को स्वदेश तथा प्रभा के दाम्पत्य जीवन के माध्यम से अभिव्यक्त किया गया है । स्वदेश अपनी पत्नी प्रभा को प्रसन्न रखने का निरंतर प्रयास करता है । पति उसे खुश करने हेतु कई मनोरंजक वार्तालाप करता है ताकि

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 2
March - April: 2026

पत्नी प्रसन्न रहे । उसके साथ भावी संतान होने की कल्पना करता है तो वह तीव्र आक्रोशी स्वर में कहती, "तुमको हमेशा यही सूझता रहता है । पहले बच्चों को पालने की हैसियत तो बना लो अपनी ।"[4] अतः पत्नी अत्यधिक व्यावहारिक रुप लिए इस तरह की भावुकतापूर्ण बातों से रुष्ट हो जाती है किन्तु पति भीतर से दुखी होता है वह डर जाता है । वह घर का सारा कामकाज करता, बेटी को संभालता, पत्नी की सेवा करता किन्तु फिर भी वह असंतुष्ट रहती है । अपने आत्म सम्मान हेतु वह कोई छोटी-मोटी नौकरी ढूँढ़ लेता है लेकिन इसके उपरांत भी वह दुखी तथा परेशान रहता है । पत्नी अधिक पैसा, समाज में नाम, मान-सम्मान, प्रतिष्ठा, रुतबा, शोहरत की इच्छा रखती है । लेकिन पति को संतुष्ट जीवन की तलाश रहती है ।

'नाटकीय' कहानी में भी पति की यही स्थिति है । पत्नी कामकाजी है और पति चन्द्र मोहन बेरोजगार है । वह एक नाटककार है किन्तु उन नाटकों से इतनी आमदनी प्राप्त नहीं होती कि उनकी गृहस्थी चल सके इसलिए पत्नी भी नौकरी करती है । पति को घर में बेटी संभालनी पड़ती है और पत्नी के काम से लौटने तक वह बेटी की देखभाल करता है । इससे पति स्वयं को घरेलू नौकर समझने लगता है । कहानी में पति-पत्नी का आपसी सौहार्द व प्रेम भी अभिव्यक्त होता है किन्तु साथ ही उनके गृहस्थ जीवन में तनाव की स्थिति स्पष्ट परिलक्षित होती है ।

'दौड़' तथा 'संतुलन' कहानियाँ स्त्री-पुरुष समानता पर बल देती हुई स्त्री को पुरुष से आगे न निकलकर बराबर चलने के लिए प्रेरित करती हैं । पुरुष और स्त्री एक-दूसरे के साथ बराबर चलेंगे तभी उनके मध्य समानता बनी रहेगी । एक-दूसरे को पीछे या आगे रखने की होड़ दोनों के जीवन में कलह, अशांति तथा असंतुष्ट की भावना उत्पन्न करती है ।

संदर्भ :-

1 कहीं जमींन नहीं, रमेश उपाध्याय, पृ. 174
2 कहाँ हो प्यारेलाल, रमेश उपाध्याय, पृ. 43
3 वहीं, पृ. 49, 50
4 पानी की लकीर, रमेश उपाध्याय, पृ. 122